

इकाई 3: आधुनिक भारतीय समाज

इकाई की रूपरेखा

- 3.0 प्रस्तावना
- 3.1 उद्देश्य
- 3.2 मानव समाज: प्रासमिक/मानदण्ड (Normative) सम्बन्ध
- 3.3 भारतीय समाज: विभिन्न मानदण्ड (Normative)
- 3.4 भारतीय समाजकी रूपरेखा: एक समालोचनात्मक समझ
- 3.5 आधुनिक भारतीय समाज: संवैधानिक मानदण्ड रूपरेखा(Framework)
- 3.6 सारांश
- 3.7 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न
- 3.8 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर
- 3.9 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

3.0 प्रस्तावना

हमारा भारत एक विशाल देश है। इस देश में विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं फिर भी विविधता में एकता है। जब दो अथवा दो से अधिक व्यक्ति परस्पर प्रेम, सहानुभूति, मित्रता तथा सहयोग अथवा इनकी विपरीत भावनाओं का अनुभव करने लगते हैं तो उनके बीच एक सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है। इस सामाजिक वातावरण को ही हम समाज की संज्ञा दे सकते हैं।

भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएं जैसे— धार्मिक, भाषीय, सांस्कृतिक, प्रजातीय, भौगोलिक, सजातीय, जनसंख्या सम्बन्धी एवं राजनीतिक आदि भिन्नताएं पाई जाती हैं। अतः अनेक भिन्नताओं के बाद भी प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक भारत के इतिहास में हमें एक अनुपम एकता देखने को मिलती है। भारतीय समाज में विभिन्न, धार्मिक व सामाजिक त्यौहारों, धार्मिक ग्रंथों, आध्यात्मवाद, सामाजिक रीति-रिवाजों और संयुक्त परिवार की व्यवस्था ने सामाजिक एकता को बढ़ाने वाले प्रमुख तत्व सिद्ध हुए। मध्यकालीन भारत में भारतीय संस्कृति की उदारता, धार्मिक समन्वय, भक्ति आन्दोलन, भाषायी मिश्रण, चित्रकला तथा भवन-निर्माण कला आदि एकता को बढ़ाने वाले प्रमुख तत्व सिद्ध हुए। ब्रिटिश काल में नयी शिक्षा व्यवस्था से पैदा होने वाली जागरूकता, समाज सुधार आन्दोलन तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन ने इस एकता में योगदान किया। अतः इस इकाई में मानव समाज, भारतीय समाज एवं आधुनिक भारतीय समाज आदि का विस्तार से चर्चा करेंगे।

3.1 उद्देश्य : इस इकाई में आप:

- मानव समाज के बारे में अध्ययन कर सकेंगे।
- भारतीय समाज के बारे में जान सकेंगे।
- भारतीय समाज की रूपरेखा के बारे में समझ सकेंगे।
- आधुनिक भारतीय समाज विभिन्न संवैधानिक मानदण्ड का अध्ययन कर समझ सकेंगे।

3.2 मानव समाज: प्रासंगिक/ मानक (Normative) सम्बन्ध

समस्त समाज-विज्ञानों के जनक अरस्तु ने मानव को सामाजिक प्राणी कहा था। केवल इतना ही नहीं, मानव के रूप में जीना भी उसके लिए मुश्किल से संभव होता है। वास्तव में मानव एवं समाज इतने अन्तरावलम्बित एवं परस्पर पूरक बन गये हैं कि एक के बिना दूसरे की सत्ता, स्थिरता एवं प्रगति की कल्पना करना भी कठिन है। समाज के बिना मानव केवल अन्ध पशु है और मानव के बिना समाज विसंगत

एवं अर्थहीन है। बहुत से व्यक्ति मिलकर एक समाज की रचना करते हैं जो बदले में उनके अस्तित्व को सुखमय व संभव बनाता है।

वास्तव में यह अभी तक एक रहस्य ही है कि आदिमानव-समाज की यथार्थ प्रकृति क्या थी? जो हो, समाज की व्याख्या करने की सामान्य पद्धति यही रही है कि एक विशिष्ट परिस्थिति समूह में कृत्रिम विकास के रूप में मानव का उदय हुआ। वे कौन सी स्थितियां थीं और उन्होंने कैसे समाज को जन्म दिया? सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी में पर्याप्त लोकप्रिय एक सिद्धान्त में इन प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं जिसके समर्थन में भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से हॉब्स (1588-1679), लॉक (1632-1704), एवं रूसो (1712-1778) के द्वारा किया गया था।

समाज व्यक्तियों का एक संगठन व समूह है। यह संगठन व्यक्तियों को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक सुरक्षा प्रदान करता है। यद्यपि समाज का निर्माण व्यक्तियों से मिलकर होता है, फिर भी समाजवादियों के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षा समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा आदर्शों को अधिक महत्व दिया जाता है। विद्वानों का मत है कि समाज की श्रेष्ठता किसी व्यक्ति पर किसी भी उत्तरदायित्व को बलपूर्वक नहीं थोपती, फिर भी समाज, सामाजिक बन्धनों का एक ऐसा जाल है, जो स्थिर न रहकर सदैव बदलता रहता है। धार्मिक विचारधारायें होती हैं, जिनके अनुसार वह व्यक्ति समस्त शक्तियों के विकास हेतु ऐसे अवसर प्रदान करता रहता है कि विकसित होने के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति उसे सबल, सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने में अपना यथाशक्ति योगदान देता रहे। समाज व्यक्ति की समस्त आवश्यकताओं/जरूरतों को पूरा करता है तथा उसे इस बात का ज्ञान कराता है कि वह उसका एक उत्तरदायी नागरिक है।

जिस प्रकार बिना समाज के मानव की कल्पना करना भ्रामक है, ठीक उसी प्रकार बिना मानव से समाज की कल्पना करना भी भारी भूल है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक मानव में कुछ जन्मजात शक्तियों तथा विशेषतायें होती हैं। इन विशेषताओं के विकसित होने पर सामाजिक प्रगति का क्षेत्र बढ़ा और बढ़ता ही चला जा रहा है।

फ्रेंकलिन के मतानुसार— “समाज शिक्षा संस्थाओं का अपने सदस्यों में ऐसे ज्ञान, कौशलों, आदर्शों तथा आदतों का प्रसार करने एवं सुरक्षित रखने के लिए परम आवश्यक है।” इस प्रकार की संस्थाओं में विद्यालय का नाम सबसे ऊपर आता है।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार: “समाज रीतियों, कार्यविधियों, अधिकार व पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा उनके विभाजनों, मानक व्यवहारों के नियंत्रणों तथा स्वतंत्रताओं की व्यवस्था है। यह **सामाजिक सम्बन्धों का जाल** है और सदैव परिवर्तित होता रहता है”।

मानव समाज अपनी संस्कृति, परम्पराओं, ज्ञान तथा अनुभवों को भावी सन्तति को प्रदान करते हुए अपने अस्तित्व को बनाये रखता है। परन्तु संस्कृति, परम्पराओं, ज्ञान तथा अनुभवों को भावी सन्तति को संक्रमणक करने का कार्य शिक्षा द्वारा ही होता है। इस प्रकार समाज अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उन संस्थाओं की स्थापना करता है, जिनके द्वारा उसके सदस्यों के विचारों, भावों तथा आदर्शों का विकास उचित ढंग से हो सके।

आइये जानते हैं कि किस प्रकार मानव इतिहास के विश्वभर के समाजों में पारिवारिक रूपों की अनेकरूपता दिखायी देती है? उदाहरण के लिए आवास की दृष्टि से कुछ समाज विवाह और पारिवारिक रीति-रिवाजों में मातृकेन्द्रित हैं जबकि अन्य समाज पितृकेन्द्रित हैं। एक ही प्रकार का परिवार हर जगह नहीं पाया जाता है। परिवारों के कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिमी देशों में एकल परिवार पाए जाते हैं। इसमें पति-पत्नी अपने बच्चों के साथ रहते हैं। भारतीय गाँवों और छोटे कस्बों में विस्तारित और संयुक्त परिवार पाए जाते हैं। संयुक्त परिवारों में दो से तीन या अधिक पीढ़ियों के लोग एक साथ एक ही छत के नीचे रहते हैं।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि भारत मुख्यतः कृषि प्रधान देश है, यहाँ की पारिवारिक रचना प्रायः कृषि की आवश्यकताओं से प्रभावित है। अपवादों को छोड़ दिया जाये तो मानव समाज पितृवंशीय, पितृस्थनीय और पितृभक्त है। आधुनिक औद्योगिक क्रांति के परिणामतः परिवार की रचना और कार्यों में गंभीर परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। पहले सभी समाजों में, परिवार, समाज की सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक संस्था थी। जीवन का अधिकांश व्यापार, परिवार के माध्यम से सम्पन्न होता था। बच्चों के शिक्षण का कार्य, शिक्षण संस्थाओं ने ले लिया है, रसोई का कार्य व्यावसायिक भोजनालयों ने ले लिया और इसी प्रकार सुरक्षा का दायित्व जहाँ समाज के पास होता था वह अब राज्य के पास चला गया है।

मानव समाज का आधार सामाजिक समूह है जिसका निर्माण दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा होता है। बालक का सबसे छोटा एवं मूलभूत सामाजिक समूह उसका परिवार है। परिवार दो प्रकार के होते हैं। पहला एकल तथा दूसरा संयुक्त। एकल व संयुक्त परिवारों में लालन-पालन के चलते बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व पर अलग-अलग प्रभाव पड़ते हैं।

एकल परिवारों में स्वतंत्रता, स्वायत्तता या इच्छाओं की पूर्ति के अपेक्षाकृत अधिक अवसर होते हैं जिससे बचपन में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता आदि के विकास के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। एकल परिवार में माता-पिता का सारा ध्यान केन्द्रित हो जाता है। जहाँ माता-पिता दोनों कामकाज पर चले जाते हैं तो बच्चें अकेले घर में रहते हैं। इससे ऐसे बच्चों में आत्मनिर्भर और जिम्मेदार होते जाते हैं। किंतु बच्चे एकाकीपन का अनुभव करना, खेल और मनोरंजन हेतु साथियों की कमी लगातार महसूस करते हैं। इन

परिवारों की आर्थिक पूर्ति के लिए बच्चे माता-पिता पर ही निर्भर रहते हैं। इन परिवारों में बच्चों में असुरक्षा की भावना भी पनपती है।

संयुक्त परिवारों में जहां बच्चों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान देते हैं और उन्हें स्वतंत्रता या स्वायत्तता से काम करने के अवसरों को कम करते हैं या इच्छाओं का अनचाहे दमन होता है। संयुक्त परिवार में बच्चों की परवरिश का भार केवल माता-पिता पर ही निर्भर नहीं रहता है। यदि किसी कारणवश माता-पिता नहीं कमा पा रहे हैं तो वह पूरे घर की जिम्मेदारी होती है। इसमें बच्चों की परवरिश परिवार कर देता है। बड़ों में जो कौशल होता है वह बच्चों में सहज तरीके से आता है। इसके विपरीत बड़ों द्वारा बुरी प्रवृत्तियाँ भी बच्चों में आ जाती है। संयुक्त परिवार में बच्चों में धैर्य, सहनशीलता और आपसी सामंजस्य बेहतर तरीके से विकसित होता है। बच्चों के पास सीखने के कई तरीके होते हैं। वे बड़ों से इतिहास जान लेते हैं। पुराने समय में कैसे, कब, क्या होता था ? इनकी जानकारी उन्हें बुजुर्गों से आसानी से मिल जाती है। आपसी चर्चाएँ, बहसों और विभिन्न धारणाओं को देखने सुनने और समझने के मौके मिलते हैं। इसमें प्रेम, सहयोग एवं समन्वय की भावना का विकास, धैर्य त्याग और सहनशीलता का विकास, खेलने और मनोरंजन हेतु लोग और साथी। संयुक्त परिवारों में बच्चों पर अत्यधिक निरंकुशता भी रहती है। उनका समय अपनी पहचान बनाने में काफी लगता है। संयुक्त परिवार में बच्चों की निर्णायक भूमिका को काफी लम्बे समय बाद स्वीकार किया जाता है।

सामाजिक समूह के अन्तर्गत विभिन्न समूह आते हैं, जो निम्नलिखित हैं:

- **जाति:** जाति उस वर्ग को कहते हैं जिसमें सदस्यों की सदस्यता तथा उनके कर्तव्य एवं अधिकार जन्म से ही निश्चित हो जाते हैं। प्राचीन भारत में हिन्दू समाज के अन्तर्गत गुण तथा कर्म के आधार पर ब्राह्मण प्रार्थना, कर्मकाण्ड, मन्त्रों का जाप तथा विद्या का पठन-पाठन करते थे, क्षत्रिय अपने प्राणों की बाजी लगा कर देश की सुरक्षा करते थे। वैश्व वाणिज्य एवं व्यापार का संचालन करते थे तथा शूद्र उक्त तीनों वर्णों की सेवा करते थे। इस प्रकार की जाति अथवा वर्ण व्यवस्था ने प्राचीन हिन्दू समाज को स्थिर तथा सुदृढ़ बनाये रखा एवं अनेक संकटों से बचाया। भारत में जाति प्राचीन काल में कितनी ही उपयोगी क्यों न रही हो, पर इस समय यह सब प्रकार की उन्नति के मार्ग में बड़ी भारी बाधा और रुकावट बन रही है।
- **व्यवसायिक समूह:** व्यवसायिक समूह वह समूह होता है जिसका प्रत्येक सदस्य किसी अमुक व्यवसाय में लगा रहता है। जैसे मिट्टी के बर्तन बनाने वाले को कुम्हार, बाल काटने वाले को नाई, खेती किसानी करने वाले को किसान, फर्नीचर का काम करने वाले हो बढ़ई कहते हैं।

- **धार्मिक समूह:** भारतीय समाज में अनेक धार्मिक समूह के लोग निवास करते हैं जिनमें मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई एवं परासी आदि हैं। इन समूहों में भी अलग-अलग उप-समूह पाए जाते हैं।

3.3 भारतीय समाज: विभिन्न मानक/ बहुल प्रासमिक (Normative)

प्राचीनकाल से भारतीय समाज एक विभिन्नतापूर्ण समाज रहा है। यहाँ का समाज, संस्कृत और परिवर्तन की प्रक्रियाएं दुनिया के सभी विद्वानों के लिए जिज्ञासा का विषय रही है। समाजशास्त्रियों ने भारतीय समाज की विभिन्नता के कारण इसे बहुजन समाज का नाम दिया है। प्राचीनकाल से भारत पर अनेक विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। जिनमें शक, हूण, मंगोल, मुगल, पुर्तागाली तथा ब्रिटिश आक्रमण प्रमुख थे। इनके फलस्वरूप भारत में अनेक संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, प्रजातियों और विश्वासों का मिश्रण होता रहा। अपने-अपने निजी स्वार्थों के कारण विदेशी इतिहासकारों ने भारतीय समाज के वास्तविक रूप को बहुत तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया है इसके बाद भी यह सच है कि भारतीय समाज और संस्कृति का इतिहास संसार में सबसे अधिक प्राचीन है।

भारतीय समाज में एक ओर हजारों वर्षों पुरानी सांस्कृतिक परम्पराएं जीवित हैं, वहीं आधुनिकता और वैज्ञानिक प्रगति के रास्ते पर भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। यहाँ परम्परा और आधुनिकता का एक ऐसा संगम देखने को मिलता है जो संसार के किसी भी दूसरे समाज में नहीं हैं इसी कारण जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है कि युगों-युगों से भारत की मौलिक एकता ही उसका सबसे महान और मौलिक तत्व रहा है। अतः भारतीय समाज को समझने के लिए उन प्रमुख सामाजिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझना आवश्यक है जो इस भारतीय समाज के अभिन्न अंग बन चुकी हैं। तो आइये भारतीय समाज के विभिन्न भिन्नताओं के बारे में जाने—

- **धार्मिक भिन्नताएं:** भारतीय समाज की जीवन शैली पर धर्म का हमेशा से व्यापक प्रभाव रहा है। धर्म में मुख्य रूप से दो तरह की विशेषताओं का समावेश होता है। पहली विशेषताएं, वे हैं जिनका सम्बन्ध एक अलौकिक शक्ति से सम्बन्धित कुछ विश्वासों और व्यवहार के तरीकों से होता है। दूसरी श्रेणी में, वे विशेषताएं आती हैं तो व्यक्तियों को कुछ विशेष तरह के नियमों का पालन करने की प्रेरणा देती है और उनमें मानवीय गुणों को बढ़ाती है। भारतीय समाज में वैदिक काल से लेकर आज तक एक दूसरे से भिन्न धर्मों और धार्मिक विश्वासों को मानने वाले समूहों को अपने आचरण के नियम निर्धारित करने की पूरी स्वतंत्रता मिलती रही।
- **भाषायी भिन्नताएं:** भारत में सांस्कृतिक विविधता का एक मुख्य आधार विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रचलन होना है। भारतीय संविधान में आज 18 भाषाओं को मान्यता दी गई है। यह

भाषाएं हिन्दी, बंगला, तेलुगू, मराठी, तमिल, उर्दू, गुजराती, मलायम, कन्नड, उडिया, पंजाबी, असमी, सिन्धी, कश्मीरी, संस्कृत, मणिपुरी, कोंकड़ी तथा नेपाली हैं। इनमें से सभी भाषाओं के अपने उपभाग हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा में खड़ी बोली, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मगधी, बुन्देली, मालवी तथा पहाड़ी कुछ प्रमुख उप-भाषाएं हैं। भारत में हिन्दी भाषा का प्रचलन सबसे अधिक होने के कारण स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही इसे राष्ट्रभाषा के रूप में देखा जाता रहा। वर्तमान में भारत के संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं में अंग्रेजी शामिल नहीं है, लेकिन विभिन्न सरकारी विभागों, न्यायालयों और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का प्रभाव बना हुआ है।

- **सांस्कृतिक भिन्नताएं:** भारतीय समाज में परम्पराओं, खान-पान, वेश-भूषा, व्यवहार के तरीकों, रहन-सहन के स्तर और नैतिक नियमों के क्षेत्र में बहुत अधिक भिन्नता देखने को मिलती है। विभिन्न क्षेत्रों की वेश-भूषा भी एक-दूसरे से अलग है। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं में स्पष्ट भिन्नता पायी जाती है।
- **जनसंख्या सम्बन्धी भिन्नताएं:** भारत में जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों का है जिन्हें तुलनात्मक रूप से बहुत कम सुविधाएं मिली हुई हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में स्त्री-पुरुषों के अनुपात में भी काफी भिन्नता देखने को मिलती है।
- **प्रजातीय भिन्नताएं:** प्रजाति का अर्थ एक ऐसे बड़े मानव समूह से होता है जिसमें कुछ विशेष तरह की शारीरिक विशेषताएं पायी जाती हैं। यह शारीरिक विशेषताएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बिना किसी अधिक परिवर्तन के जैविकीय रूप से हस्तांतरित होती रहती है। प्रजातीय आधार पर संसार में तीन मुख्य प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिन्हें ककिशायड, मंगोलॉयड, तथा नीग्रॉयड प्रजाति कहा जाता है। सरल शब्दों में इन्हीं को हम सफेद, पीले तथा काले रंग के मानव समूहों के नाम से सम्बोधित कर सकते हैं। भारतीय समाज की विशेषता यह है कि यहाँ आरम्भ से ही द्रविड तथा आर्य समूहों की प्रजातीय विशेषताएं एक दूसरे से भिन्न थीं। द्रविडों में नीग्रॉयड प्रजाति की विशेषताओं की प्रधानता थी, जबकि आर्य लोगों में कोंकेशायड अथवा गोरे रंग वाली प्रजाति की विशेषताएं अधिक थी।

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

1. मैकाइवर तथा पेज के अनुसार समाज क्या है?

.....

.....

.....

2. मानव समाज का आधार क्या है। एकल व संयुक्त परिवार से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

3. भारतीय समाज क्या है? भारतीय समाज के विभिन्न भिन्नतायें कौन-कौन सी हैं।

.....

.....

.....

4. धार्मिक एवं व्यवसायिक समूह से आप क्या समझते हैं?

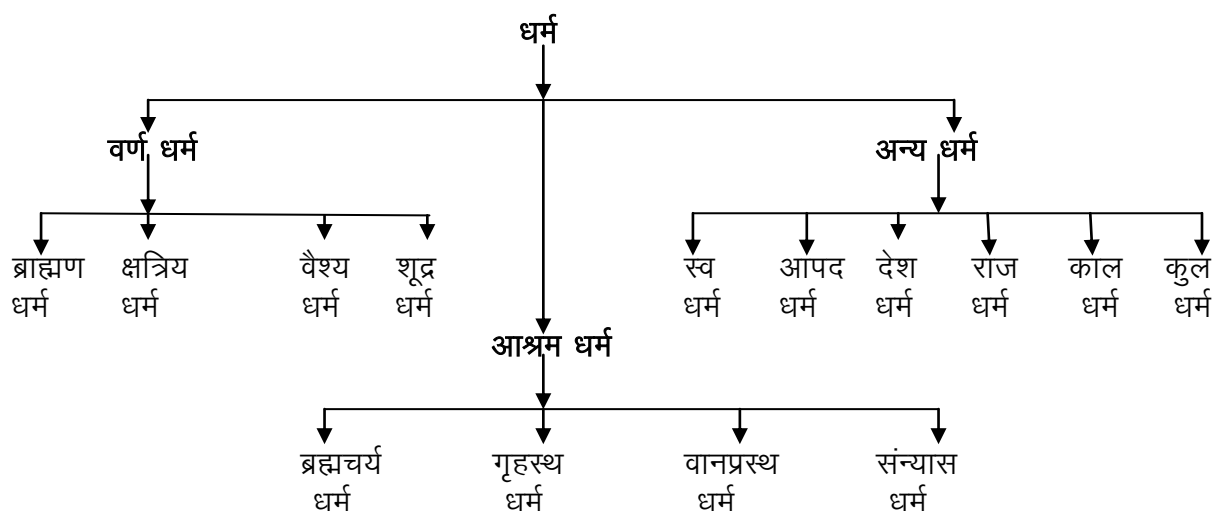
.....

.....

.....

3.4 भारतीय समाज की रूपरेखा : एक समालोचनात्मक समझ

भारतीय समाज मूल रूप से धर्म पर आश्रित रहा है। यदि हम अतीत को देखें तो ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में सुव्यस्थित एवं उच्चादर्शों से युक्त धर्म की व्यवस्था रही है। जिसे आप एक तालिका के माध्यम से समझ सकते हैं।



आइये भारतीय समाज की रूपरेखा के बारे में जाने:

- **प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज:** प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज में धर्म—प्रधान था, इसलिये उस समाज में धार्मिक सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए व्यक्ति के धार्मिक तथा चारित्रिक विकास पर बल दिया जाता था।
- **आधुनिक समाज:** आधुनिक समाज पर विज्ञान का विशेष प्रभाव है। वर्तमान समाज के विभिन्न रूप हैं। प्रत्येक समाज अपने-अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है।
- **आदर्शवादी समाज:** आदर्शवादी समाज में विचारों एवं बुद्धि को विशेष महत्व दिया गया। अतः ऐसे समाज की शिक्षा में चरित्र गठन तथा नैतिक विकास पर बल दिया जाता है।
- **भौतिकवादी समाज:** भौतिकवादी समाज में भौतिक सम्पन्नता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज में नैतिक आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों, रचनात्मक कार्यों तथा विवेक आदि के विकास को कोई स्थान देते हुए शिक्षा की व्यवस्था केवल भौतिक सुखों की उन्नति के लिए की जाती है जिससे समाज धनधान्य से परिपूर्ण हो जाते हैं।
- **प्रयोजनवादी समाज:** प्रयोजनवादियों का विश्वास है कि सत्य सदैव देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। उनके अनुसार सत्य की कसौटी उसका पुनर्निरीक्षण है। अतः यदि कोई सत्य यदि किसी परिस्थिति में सत्य सिद्ध नहीं होता, तो वह असत्य है। चूँकि प्रयोजनवादियों के अनुसार सत्य परिवर्तनशील है, इसलिए प्रयोजनवादी समाज में विचार की अपेक्षा क्रिया तथा बुद्धि की अपेक्षा परिस्थिति को अधिक महत्व देते हुए शिक्षा की व्यवस्था नवीन मूल्यों के निर्माण हेतु की जाती है।

- **जनतन्त्रवादी समाज:** जनतन्त्रवादी समाज में व्यक्ति के व्यक्तित्व को विशेष महत्व दिया जाता है। चूंकि जनतन्त्र वह आदर्श है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को एक सुखी, सम्पन्न तथा समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करने के लिए समान अवसर प्राप्त होते हैं। इसलिए जनतन्त्रवादी समाज में प्रत्येक मानव को चिन्तन तथा मनन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। प्रत्येक मानव से यह आशा की जाती है कि वह ऐसे कार्य करें, जिनसे सबका भला हो। ऐसे समाज में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का आदर करता है तथा प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के विकास में बाधक सिद्ध न होकर मेल-जोल के साथ रहते हुए कंधे से कंधा मिलाकर चलता है जिससे समाज दिन-प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर बढ़ता जाता है।

3.5 आधुनिक भारतीय समाज: संवैधानिक मानदण्ड की रूपरेखा

आधुनिक युग में भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुये हैं और निरन्तर हो रहे हैं जिनका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

- **जनतान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था:** आधुनिक भारत में जनतान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था लागू की गयी है। इस व्यवस्था में दो तत्व निहित हैं— जनतन्त्र और समाजवाद। जनतन्त्र के अनुसार भारत की जनता के हाथ में शासन की सर्वोच्च सत्ता है और समाजवाद के अनुसार व्यक्ति और समाज दोनों के उत्थान पर बल देकर वर्गहीन समाज स्थापित करने की कल्पना की गयी है।
- **धर्म निरपेक्षता:** आधुनिक भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता धर्म निरपेक्षता है। यहाँ पर सभी व्यक्तियों को समान धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। धार्मिक स्वतन्त्रता के परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति किसी धर्म की स्वीकार करने और उसका प्रचार व प्रसार करने के लिये स्वतन्त्र होता है। राज्य किसी भी धार्मिक कार्य में कोई हस्तक्षेप नहीं करता। राज्य किसी भी धर्म विशेष को न संरक्षण देता है और न ही कोई सुविधा देता है।
- **सामाजिक न्याय :** सामाजिक न्याय का अर्थ है— समाज में सबको यथोचित सम्मान तथा उन्नति करने के अवसर उपलब्ध हों। सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिये भारतीय संविधान में अनेक प्रावधान किये गये हैं। संविधान में कहा गया है कि सबको समानता की दृष्टि से सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान की जानी चाहिये और समाज के उन वर्गों को विशेष सुविधायें दी जानी चाहिये जिनका लम्बे समय से शोषण और दमन हुआ है। जिससे वे उठकर समाज के दूसरे वर्गों के बराबर आ सकें।
- **दहेज प्रथा और बाल-विवाह:** देश में आधुनिक भारतीय समाज की एक अत्यन्त विस्फोटक समस्या है जिसके कारण जीवन का भी बलिदान करना पड़ता है। कानून बनने के बाल विवाह की कुरीति खूब प्रचलित है। विधवाओं पर अत्याचार और अनमोल विवाह आज भी कम नहीं हुये हैं।

- **जनसंख्या वृद्धि:** आधुनिक भारतीय समाज में सबसे बड़ी समस्या बढ़ती हुयी जनसंख्या की है। इस समस्या ने भारतीय समाज के आधुनिक स्वरूप को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस समस्या के परिणामस्वरूप हो रहा है, मंहगाई व बेरोजगारी बढ़ रही है, जीवन स्तर गिर रहा है, प्रदूषण की समस्या पैदा हो रही है और सामाजिक व नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। अनेक प्रयास करने के बाद भी जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित नहीं किया जा सका है।
- **सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन:** आधुनिक समाज में नवीन विचारों के कारण क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये हैं। जिसके कारण प्राचीन सामाजिक मूल्य अतीत के गर्त में विलुप्त हो रहे हैं और उनका स्थान नये मूल्य ले रहे हैं। इसलिये भारतवासी आध्यात्मिकता को छोड़कर भौतिकता की ओर तेजी से दौड़ रहे हैं। चूंकि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया अभी चल रही है, इसलिये सभी मूल्यों का निर्धारण अभी नहीं हो पाया है और भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता बढ़ रही है।
- **नैतिक व धार्मिक मूल्यों में परिवर्तन:** भारतीय समाज धर्म प्रधान रहा है। यहाँ व्यक्तियों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण हिंसा, प्रेम के स्थान पर घृणा, सहयोग के स्थान पर असहयोग व ईर्ष्या और परोपकार के स्थान पर स्वार्थभावना बढ़ रही है।
- **उच्च आकांक्षायें:** आधुनिक समाज में प्रत्येक भारतीय की इच्छायें और आकांक्षायें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इन इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये व्यक्ति अनैतिक और अवैधानिक कार्य कर रहा है। चोरी-डकैती, रिश्वत, भ्रष्टाचार आदि के बढ़ने से मनुष्य का चरित्रिक पतन हो रहा है जिसका प्रभाव आज के समाज पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है।
- **आर्थिक असमानता:** आधुनिक भारतीय समाज में आर्थिक आधार पर तीन वर्गों में सारी जनता बंटी हुयी हैं— धनी वर्ग, मध्यम वर्ग और निर्धन वर्ग। धनी वर्ग और अधिक धनी होता जा रहा है और निर्धन वर्ग और अधिक निर्धन हो रहा है। समाज में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। धनी और निर्धन के बीच खाई दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। मध्यम वर्ग व्यापक रूप से उभर रहा है और अपनी स्थिति से असन्तुष्ट है।

सन 1947 में भारतीय समाज स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र होने के बाद आधुनिक भारतीय समाज में कुछ संवैधानिक मानदण्ड अपनाये गये, जो निम्नलिखित हैं:

(अ) **वैयस्तिक स्वतंत्रता:** स्वतंत्रता ही जीवन है। इसके अभाव में मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता। इसलिए वैयस्तिक स्वतंत्रता के लिए भारतीय समाज में संविधान के अनुच्छेद 19 में निम्नलिखित सात स्वतन्त्रताओं का उल्लेख किया है—

- वाणी एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता

- सभा करने की स्वतन्त्रता
- आवास की स्वतन्त्रता
- संघ बनाने की स्वतन्त्रता
- भ्रमण करने की स्वतन्त्रता
- सम्पत्ति अर्जन, धारण और बेचने की स्वतन्त्रता
- पेशा व्यवसाय, वाणिज्य एवं व्यापार की स्वतन्त्रता

(ब) **वैयक्तिक समानता:** वह समाज जहाँ धर्म, वर्ण, लिंग, मूलवंश, जाति के आधार पर वर्गीकरण एवं विभेद न हो। आधुनिक भारतीय समाज व्यवस्था में न केवल वैयक्तिक समानता की आकांक्षा की गयी, बल्कि यह भी अपेक्षा की गयी कि विगत सैकड़ों वर्षों में हमने व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य अनेक भेद बनाकर जो अनेक वर्ग बना दिए हैं, वे समाप्त हों और किसी भी दृष्टि से व्यक्ति-व्यक्ति में कोई अन्तर नहीं किया जाये। ये वैयक्तिक समानता निम्नलिखित हैं—

- सार्वजनिक स्थानों के उपयोग में धर्म, जाति आदि आधारों पर विभेद न हो।
- लोक सेवाओं में सबको समान अवसर मिले।
- अस्पृश्यता समाप्त कर दी जाये।
- धार्मिक दृष्टि से भी सभी धर्म समान हो।
- राज्य, धर्म, जाति, वर्ण, लिंग, जन्म—स्थान, वंशानुक्रम के आधार पर नागरिकों में विभेद नहीं करें।
- जो अब तक पिछड़े रह गये— उन्हें समान स्तर पर लाया जाये, इन्हें सुविधा दी जाये।
जैसे— पिछड़े वर्गों, जातियों, आदिवासियों आदि को तथा स्त्रियों को।

(स) **आर्थिक न्याय पर आधारित समाज:** आधुनिक भारतीय समाज में आर्थिक न्याय के आधार पर कुछ संवैधानिक मानदण्ड अपनाये गये जो निम्नलिखित हैं:

- सभी को जीविकोपार्जन के लिए पर्याप्त साधन हों।
- पुरुष, स्त्री, वर्ग, वर्ण, वंश आदि का भेद आर्थिक क्षेत्र में न किया जाये।
- समुदाय की भौतिक सम्पत्ति का स्वामित्व एवं नियन्त्रण, सामूहिक हित के लिये हो।
- धन और उत्पादन के साधनों का केन्द्रीकरण न हो।
- प्रत्येक व्यक्ति को पेशा, व्यवसाय, वाणिज्य-व्यापार की स्वतन्त्रता एवं समान अवसर हों।
- सम्पत्ति अर्जन, धारण एवं बेचने की स्वतन्त्रता हो।

- कमजोर वर्गों का शोषण न हो।

(द) राजनीति आधारित संवैधानिक मानदण्ड:

राजनीति आधारित संवैधानिक मानदण्ड निम्नलिखित हैं:

- जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिये शासन हो।
- व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अन्तिम लक्ष्य हो।
- राजनीतिक अधिकारों की दृष्टि से व्यक्तियों के लिंग, जाति, वर्ण, धर्म, वंशानुक्रम के आधार पर भेद नहीं किया जाये।
- सभी नागरिकों को सभी नागरिक स्वतन्त्रताएं प्रदान की जाये।
- सभी नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक न्याय प्रदान किया जाये।
- सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो।

(इ) धर्म आधारित संवैधानिक मानदण्ड: भारतीय समाज एक बहुधर्म समाज है। इसमें अनेक सम्प्रदाय व समुदाय के लोग रहते हैं, जिनके विश्वास एवं उपासना की पद्धतियां भिन्न-भिन्न हैं। धर्म आधारित संवैधानिक मानदण्ड निम्नलिखित हैं:

- सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार होगा।
- सभी धर्मों को समान संरक्षण मिलेगा।
- सभी व्यक्तियों की अन्तःकरण की स्वतन्त्रता तथा धर्म को अबोध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार का अधिकार होगा।
- धार्मिक कार्यों के प्रबन्ध की स्वतन्त्रता होगी।
- राजकीय तथा राज्य पोषित संस्थाओं में धर्म विशेष की शिक्षा की व्यवस्था नहीं होगी।
- किसी भी बालक को धर्म-विशेष की शिक्षा ग्रहण करने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा।

(ई) शैक्षिक आधारित संवैधानिक मानदण्ड: आधुनिक भारतीय समाज में कुछ शैक्षिक आधारित संवैधानिक मानदण्ड हैं जो निम्नलिखित हैं:

- धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, वंश आदि के भेद बिना सभी को शिक्षा के समान अवसर दिए जाएं।
- 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों के लिये अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था की जाये।
- अनुसूचित जातियों/जनजातियों, स्त्रियों तथा अन्य कमजोर वर्गों के शैक्षिक हितों की उन्नति का प्रयास किया जाये।
- शिक्षण संस्थाओं में इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था हो जिसमें:

- लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके।
- सर्वधर्म सद्भाव का विकास हो सके।
- सामाजिक, आर्थिक न्याय की भावना का विकास हो सके।

भारतीय संविधान में भारतीय समाज की उन्नति और विकास के लिये अनेक प्रावधान लागू किये गये—

धारा 15(1) में घोषणा की गयी— राज्य किसी भी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, कुल, वंश, जाति, जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर अन्तर अथवा भेद स्थापित नहीं करेगा।

धारा 18 में कहा गया— अस्पृश्यता समाप्त की जाती है और इसका किसी भी रूप में व्यवहार निषिद्ध है। अस्पृश्यता के कारण किसी प्रकार की अयोग्यता का प्रचलन कानून के अनुसार दण्डनीय अपराध होगा।

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

5. भारतीय समाज मूल रूप से किस पर आश्रित रहा है। आधुनिक समाज और आदर्शवादी समाज से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

6. धर्म क्या है ? वर्ण धर्म को कितने भागों में बांटा गया है।

.....

.....

.....

7. जनतान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

8. आधुनिक भारतीय समाज में शैक्षिक आधारित संवैधानिक मानदण्ड क्या हैं ?

.....

.....

.....

3.6 सारांश: इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ गये कि—

- मानव समाज, समाज व्यक्तियों का एक संगठन या समूह है जिसकी रचना व्यक्तियों ने अपने हित के लिए की है। यह संगठन व्यक्तियों को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक सुरक्षा प्रदान करता है। यद्यपि समाज का निर्माण व्यक्तियों से मिलकर होता है, फिर भी समाजवादियों के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षा समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा आदर्शों को अधिक महत्व दिया जाता है। जिस प्रकार बिना समाज के व्यक्ति की कल्पना करना भ्रामक है, ठीक उसी प्रकार बिना व्यक्तियों से समाज की कल्पना करना भी भारी भूल है।
- जान सके कि मानव समाज का आधार सामाजिक समूह है जिसके अन्तर्गत विभिन्न समूह जैसे जाति, व्यवसायिक समूह एवं धार्मिक समूह आदि आते हैं।
- प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज एक विभिन्नतापूर्ण समाज रहा है, जिसमें विभिन्न भिन्नतायें जैसे— धार्मिक, भाषायी, सांस्कृतिक, जनसंख्या सम्बन्धी एवं प्रजातीय, आदि भिन्नतायें पाई जाती हैं।
- भारतीय समाज मूल रूप से धर्म पर आश्रित रहा है। भारतीय समाज के विभिन्न भागों जैसे: प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज, आधुनिक समाज, आदर्शवादी समाज, भौतिकवादी समाज, प्रयोजनवादी समाज एवं जनतन्त्रवादी समाज के बारे में जान सके।
- आधुनिक भारतीय समाज में हुये विभिन्न परिवर्तनों जैसे: जनतान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक न्याय, दहेज प्रथा और बाल—विवाह, जनसंख्या वृद्धि, सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन, नैतिक व धार्मिक मूल्यों में परिवर्तन, उच्च आकांक्षाएँ एवं आर्थिक असमानता आदि हैं।
- आधुनिक भारतीय समाज के संवैधानिक मानदण्डों जैसे: वैयक्तिक स्वतंत्रता, वैयक्तिक समानता, आर्थिक न्याय पर आधारित समाज, राजनीति आधारित संवैधानिक मानदण्ड, धर्म आधारित संवैधानिक मानदण्ड, शैक्षिक आधारित संवैधानिक मानदण्ड के बारे में जान सके।

3.7 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

1. मानव समाज से क्या तात्पर्य है विवेचना कीजिए।
2. भारतीय समाज की कुछ प्रमुख सांस्कृतिक भिन्नताओं की विवेचना कीजिए।
3. भारतीय समाज के विविधता के किन्हीं तीन कारणों को स्पष्ट कीजिए।
4. धार्मिक, भाषायी और सांस्कृतिक आधार पर भारतीय समाज को किस तरह एक विभिन्नतायुक्त समाज कहा जा सकता है।
5. भारतीय समाज की विभिन्नता के कारणों और परिणामों को समझाइए।

6. किस प्रकार मानव समाज अपनी संस्कृति, परम्पराओं, ज्ञान तथा अनुभवों को भावी सन्तति को प्रदान करते हुए अपने अस्तित्व को बनाये रखता है। विवेचना कीजिए।
7. इस इकाई में दिये गये विभिन्न सामाजिक समूह के अलावा और कौन-कौन से विभिन्न सामाजिक समूह को सकते हैं। विवेचना कीजिए।
8. भारतीय समाज का समालोचनात्मक अध्ययन कर संक्षिप्त में विवेचना कीजिए।
9. आधुनिक भारतीय समाज से आप क्या समझते हैं। आधुनिक भारतीय समाज में सबसे अधिक किस समस्या का सामना करना पड रहा है एवं इसे किस प्रकार से दूर किया जा सकता है।
10. आधुनिक भारतीय समाज में कौन-कौन से संवैधानिक मानदण्ड अपनाये गये। वर्णन कीजिए।
11. आधुनिक भारतीय समाज का बालक की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड रहा है।

3.8 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1. मैकाइवर तथा पेज के अनुसार: "समाज रीतियों, कार्यविधियों, अधिकार व पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा उनके विभाजनों, मानक व्यवहारों के नियंत्रणों तथा स्वतंत्रताओं की व्यवस्था है। यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और सदैव परिवर्तित होता रहता है"।
2. मानव समाज का आधार सामाजिक समूह है, सामाजिक समूह का निर्माण दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा होता है। बालक का सबसे छोटा एवं मूलभूत सामाजिक समूह उसका परिवार है। परिवार दो प्रकार के होते हैं। पहला एकल तथा दूसरा संयुक्त। एकल व संयुक्त परिवारों में लालन-पालन के चलते बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व पर अलग-अलग प्रभाव होते हैं।
 एकल परिवारों में स्वतंत्रता, स्वायत्तता या इच्छाओं की पूर्ति के अपेक्षाकृत अधिक अवसर होते हैं जिससे बचपन में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता आदि के विकास के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। एकल परिवार में माता-पिता का सारा ध्यान केन्द्रिकृत हो जाता है। जहाँ माता-पिता दोनों कामकाज पर चले जाते हैं तो बच्चें अकेले घर में रहते हैं। इससे ऐसे बच्चों में आत्मनिर्भर और जिम्मेदार होते जाते हैं। किंतु बच्चे एकाकीपन का अनुभव करना, खेल और मनोरंजन हेतु साथियों की कमी लगातार महसूस करते हैं। इन परिवारों की आर्थिक पूर्ति के लिए बच्चे माता-पिता पर ही निर्भर रहते हैं। इन परिवारों में बच्चों में असुरक्षा की भावना भी पनपती है।
 संयुक्त परिवारों में जहां बच्चों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान देते हैं और उन्हें स्वतंत्रता या स्वायत्तता से काम करने के अवसरों को कम करते हैं या इच्छाओं का अनचाहे दमन होता है। संयुक्त परिवार में बच्चों की परवरिश का भार केवल माता-पिता पर ही निर्भर नहीं रहता है। यदि किसी कारणवश माता-पिता नहीं कमा पा रहे हैं तो वह पूरे घर की जिम्मेदारी होती है। इसमें बच्चों की

परवरिश परिवार कर देता है। बड़ों में जो कौशल और हुनर होता है वह बच्चों में सहज तरीके से आता है। इसके विपरीत बड़ों द्वारा बुरी प्रवृत्तियाँ भी बच्चों में आ जाती है। संयुक्त परिवार में बच्चों में धैर्य, सहनशीलता और आपसी सामंजस्य बेहतर तरीके से विकसित होता है। बच्चों के पास सीखने के कई तरीके होते हैं।

3. प्राचीनकाल से भारतीय समाज एक विभिन्नतापूर्ण समाज रहा है। भारतीय समाज और संस्कृति का इतिहास संसार में सबसे अधिक प्राचीन है। यहाँ का समाज, संस्कृत और परिवर्तन की प्रक्रियाएं दुनिया के सभी विद्वानों के लिए जिज्ञासा का विषय रही है। समाजशास्त्रियों ने भारतीय समाज की विभिन्नता के कारण इसे बहुजन समाज का नाम दिया है। भारतीय समाज के विभिन्न भिन्नतायें मुख्यतः धार्मिक भिन्नताएं, भाषायी भिन्नताएं, सांस्कृतिक भिन्नताएं, जनसंख्या सम्बन्धी भिन्नताएं एवं प्रजातीय भिन्नताएं आदि हैं।
4. *व्यवसायिक समूह* : व्यवसायिक समूह वह समूह होता है जिसका प्रत्येक सदस्य किसी अमुक व्यवसाय में लगा रहता है। जैसे मिट्टी के बर्तन बनाने वाले को कुम्हार, बाल काटने वाले को नाई, खेती किसानी करने वाले को किसान, फर्नीचर का काम करने वाले को बढई कहते हैं। *धार्मिक समूह*: भारतीय समाज में अनेक धार्मिक समूह के लोग निवास करते हैं जिनमें मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई एवं परासी आदि हैं। इन समूहों में भी अलग-अलग उप-समूह हैं।
5. भारतीय समाज मूल रूप से धर्म पर आश्रित रहा है। *आधुनिक समाज*: आधुनिक समाज पर विज्ञान/प्रौद्योगिकी का विशेष प्रभाव है। वर्तमान समाज के विभिन्न रूप हैं। प्रत्येक समाज अपने-अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। *आदर्शवादी समाज*: आदर्शवादी समाज में विचारों एवं बुद्धि को विशेष महत्व दिया गया। अतः ऐसे समाज की शिक्षा में चरित्र गठन तथा नैतिक विकास पर बल दिया जाता है।
6. धर्म शब्द 'धृ' धातु में 'मय' प्रत्यय लगाने से बना है। 'धृ' का अर्थ हुआ धारण करने योग्य तथा मय का अर्थ है शाश्वत मूल्य अर्थात् धारण करने योग्य शाश्वत मूल्य। इसका अर्थ है कि मानव कल्याण के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए समस्त पारलौकिक तथा शाश्वत मूल्यों को धारण करना चाहिए, जिससे इस लोक तथा परलोक दोनों में कल्याण हो। वर्ण धर्म को मुख्यतः चार भागों में बांटा गया है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एवं शूद्र ।
7. आधुनिक भारत में जनतान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था लागू की गयी है। इस व्यवस्था में दो तत्व निहित हैं— जनतन्त्र और समाजवाद। जनतन्त्र के अनुसार भारत की जनता के हाथ में शासन की

सर्वोच्च सत्ता है और समाजवाद के अनुसार व्यक्ति और समाज दोनों के उत्थान पर बल देकर वर्गहीन समाज स्थापित करने की कल्पना की गयी है।

8. आधुनिक भारतीय समाज में कुछ शैक्षिक आधारित संवैधानिक मानदण्ड हैं जो निम्नलिखित हैं:

- धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, वंश आदि के भेद बिना सभी को शिक्षा के समान अवसर दिए जाएं।
- 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों के लिये अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था की जाये।
- अनुसूचित जातियों/जनजातियों, स्त्रियों तथा अन्य कमजोर वर्गों के शैक्षिक हितों की उन्नति का प्रयास किया जाये।
- शिक्षण संस्थाओं में इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था हो जिसमें:
 - लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके।
 - सर्वधर्म सद्भाव का विकास हो सके।
 - सामाजिक, आर्थिक न्याय की भावना का विकास हो सके।

3.9 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

- मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र (2005). भारतीय समाज में शिक्षा, डिप्लोमा इन एजुकेशन आपरेशन क्वालिटी, मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, भोपाल।
- सक्सेना, एन.आर.स्वरूप एवं कुमार,संजय (2007). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
- अग्रवाल, गोपाल कृष्ण. समाजशास्त्र, हायर सेकण्डरी, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, इन्दौर।
- अग्रवाल, के.सी. (2015). समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पचौरी, गिरीश(2008). शिक्षा के सामाजिक आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, आर.के. एवं शर्मा, एच.एस. (2008), प्रगतिशील भारत में शिक्षा, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
- धर्मेन्द्र (2008). समाजशास्त्र. टाटा मैग्रेहील्स पब्लिसिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
- प्रसाद, महादेव (2002), महात्मा गांधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।